चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........हरि भूमि........

दिनांक ..3..1..2021....पृष्ठ संख्या......9.........कॉलम.......2-8.......

15 जनवरी तक रहेगी जारी, एचएयू का चार नंबर गेट भी खोला गया

गुलदाउदी फूलों की खरीदारी के लिए बढ़ रहा शहरवासियों का रुझान
बोटनिकल गार्डन में हकृवि ने बेचे 50 हजार रुपये के विभिन्न पौधे

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार नंबर गेट के नजदीक स्थित बोटनिकल गार्डन में आम जन के लिए गुलदाउदी फूलों की विभिन्न किस्मों की बिक्री जारी है। हालांकि इस बार कोरोना महामारी के चलते प्रतिवर्ष की भांति गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी का आयोजन नहीं किया जा सका लेकिन बावजूद इसके लोगों का रूझान कम नहीं हुआ है। प्रतिदिन कई लोग फूलों की किस्मों और उनसे संबंधित अन्य जानकारियों व खरीदारी के लिए यहां आ रहे हैं। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. रेनू मुंजाल ने बताया कि कोरोना महामारी की सभी हिदायतों का पालन करते हुए इन फूलों की बिक्री की जा रही है। लोगों को प्रतिवर्ष इस मौसम के फूलों की प्रदर्शनी का बेसब्री से इंतजार रहता है, लेकिन इस बार परिस्थितियां अनुकूल न होने के कारण यह संभव नहीं हो पाया। उन्होंने बताया कि गुलदाउदी की लगभग 10 प्रजातियों के अलावा विभिन्न किस्म के पौधों की बिक्री लोगों के रूझान को देखते हुए 15 जनवरी तक जारी रहेगी।

खास बातें कोरोना महामारी के चलते प्रतिवर्ष की भांति गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी का आयोजन नहीं किया जा सका

- आम जन के लिए गुलदाउदी फूलों की विभिन्न किस्मों की बिक्री जारी
- कोरोना महामारी की सभी हिदायतों का पालन करते हुए इन फूलों की बिक्री की जा रही है जो 15 जनवरी तक रहेगी

गार्डन में लगभग 600 से प्रजातियों के पौधे

डॉ. रेनू मुंजाल ने बताया कि बोटेनिकल गार्डन 10.5 एकड़ में फैला हुआ है जिसमें लगभग 600 विविध प्रकार के पौधों की प्रजातियां शामिल हैं। उन्होंने बताया कि 15 जनवरी तक की जाने वाली बिक्री में गुलदाउदी की 10 प्रजातियों के अलावा कैक्टस व बोंसाई की विभिन्न प्रजातियां बिक्री के लिए प्रदर्शित की गई हैं। अब तक विभिन्न किस्मों की करीब 50 हजार रुपये से अधिक की बिक्री हो चुकी है।

एचएयू का चार नंबर गेट खुलने से बढ़ रही संख्या

डॉ. रेनू मुंजाल के अनुसार नए साल से विश्वविद्यालय के गेट नंबर चार को सुबह साढ़े आठ बजे से सायं साढ़े पांच बजे तक खोल दिया गया है, जिसके चलते अब इस फूलों की प्रदर्शनी व खरीदारी के प्रति लोग अधिक संख्या में आ रहे हैं।

फोटो कैप्शन : गार्डन में फूलों की प्रदर्शनी को निहारते व खरीदारी करते लोग व बिक्री के लिए रखे फूलों के पौधे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम .... दैनिक सवेरा ....

दिनांक 3.1.2021 पृष्ठ संख्या 7 कॉलम 3-6

पौधों की बिक्री लोगों के रूझान को देखते हुए 15 जनवरी तक रहेगी जारी

एचएयू में गुलदाउदी फूलों की खरीदारी के लिए बढ़ रहा शहरवासियों का रूझान

हिसार, 2 जनवरी (सुरेंद्र सोढी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार नंबर गेट के नजदीक स्थित बोटेनिकल गार्डन में आम जन के लिए गुलदाउदी फूलों की विभिन्न किस्मों की बिक्री जारी है। हालांकि इस बार कोरोना महामारी के चलते प्रतिवर्ष की भांति गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी का आयोजन नहीं किया जा सका लेकिन बावजूद इसके लोगों का रूझान कम नहीं हुआ है। प्रतिदिन कई लोग फूलों की किस्मों और उनसे संबंधित अन्य जानकारियों व खरीदारी के लिए यहां आ रहे हैं। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. रेनू मुंजाल ने बताया कि कोरोना महामारी की सभी हिदायतों का पालन करते हुए इन फूलों की बिक्री की जा रही है। लोगों को प्रतिवर्ष इस मौसम के फूलों की प्रदर्शनी का बेसब्री से इंतजार रहता है, लेकिन इस बार परिस्थितियां अनुकूल न होने के कारण यह संभव नहीं हो पाया। उन्होंने बताया कि गुलदाउदी की लगभग 10 प्रजातियों के अलावा विभिन्न किस्म के पौधों की बिक्री लोगों के रूझान को देखते हुए 15 जनवरी तक जारी रहेगी। उन्होंने बताया कि गत दिनों इन फूलों की प्रदर्शनी का अवलोकन करने के लिए विधायक डॉ. कमल गुप्ता की धर्मपत्नी डॉ. प्रतिमा गुप्ता ने दौरा कर यहां के मालियों द्वारा की गई मेहनत की सराहना की। विधायक की पत्नी ने कहा कि फूल मन का आनंदित कर देते हैं और मनुष्य के मन पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। डा. रेनू मुंजाल ने बताया कि बोटेनिक्ल गार्डन 10.5 एकड़ में फैला हुआ है जिसमें लगभग 600 विविध प्रकार के पौधों की प्रजातियां शामिल हैं। उन्होंने बताया कि 15 जनवरी तक की जाने वाली बिक्री में गुलदाउदी की 10 प्रजातियों के अलावा कैक्टस व बोंसाई की विभिन्न प्रजातियां बिक्री के लिए प्रदर्शित की गई हैं। अब तक विभिन्न किस्मों की करीब 50 हजार रूपये से अधिक की बिक्री हो चुकी है।

बोटेनिक्ल गार्डन का अवलोकन करते हुए विधायक कमल गुप्ता की धर्मपत्नी डॉ. प्रतिमा गुप्ता व अन्य।

हकृवि का चार नंबर गेट खुलने से बढ़ रही है संख्या

डा. रेनू मुंजाल के अनुसार नए साल से विश्वविद्यालय के गेट नंबर चार को सुबह साढ़े आठ बजे से सांय साढ़े पांच बजे तक खोल दिया गया है, जिसके चलते अब इस फूलों की प्रदर्शनी व खरीदारी के प्रति लोग अधिक संख्या में आ रहे हैं। विधायक की पत्नी के साथ बोटेनिक्ल गार्डन में मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह, स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा क्वात्रा, डॉ. अरविंद मलिक व अन्य मौजूद थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........दैनिक जागरण........

दिनांक ..3.1.2020.....पृष्ठ संख्या........4........कॉलम........6-8........

एचएयू में गुलदाउदी फूलों की खरीदारी के लिए बढ़ रहा शहरवासियों का रुझान

जागरण संवाददाता, हिसारः चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार नंबर गेट के नजदीक स्थित बोटेनिकल गार्डन में आम जन के लिए गुलदाउदी फूलों की विभिन्न किस्मों की बिक्री जारी है। हालांकि इस बार कोरोना महामारी के चलते प्रतिवर्ष की भांति गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी का आयोजन नहीं किया जा सका लेकिन बावजूद इसके लोगों का रुझान कम नहीं हुआ है। प्रतिदिन कई लोग फूलों की किस्मों और उनसे संबंधित अन्य जानकारियों व खरीदारी के लिए यहां आ रहे हैं।

मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डा. रेनू मुंजाल ने बताया कि कोरोना महामारी की सभी हिदायतों का पालन करते हुए इन फूलों की बिक्री की जा रही है। लोगों को प्रतिवर्ष इस मौसम के फूलों की प्रदर्शनी का बेसब्री से इंतजार रहता है, लेकिन इस बार परिस्थितियां अनुकूल न होने के कारण यह संभव नहीं हो पाया। उन्होंने बताया कि गुलदाउदी की लगभग 10 प्रजातियों के अलावा विभिन्न किस्म के पौधों की बिक्री लोगों के रुझान को देखते हुए 15 जनवरी तक जारी रहेगी। उन्होंने बताया कि गत दिनों इन फूलों की प्रदर्शनी का अवलोकन करने के लिए विधायक डॉ. कमल गुप्ता की धर्मपत्नी डॉ. प्रतिमा गुप्ता ने दौरा कर यहां के मालियों द्वारा की गई मेहनत की सराहना की।

बोटेनिक्ल गार्डन 10.5 एकड़ में फैला हुआ है जिसमें लगभग 600 विविध प्रकार के पौधों की प्रजातियां शामिल हैं। उन्होंने बताया कि 15 जनवरी तक की जाने वाली बिक्री में गुलदाउदी की 10 प्रजातियों के अलावा कैक्टस व बोंसाई की विभिन्न प्रजातियां बिक्री के लिए प्रदर्शित की गई हैं। अब तक विभिन्न किस्मों की करीब 50 हजार रूपये से अधिक की बिक्री हो चुकी है।

15 जनवरी तक पौधों की होगी बिक्री

एचएयू का चार नंबर गेट खुलने से बढ़ रही संख्या

नए साल से विश्वविद्यालय के गेट नंबर चार को सुबह साढ़े आठ बजे से सायं साढ़े पांच बजे तक खोल दिया गया है, जिसके चलते अब इस फूलों की प्रदर्शनी व खरीदारी के प्रति लोग अधिक संख्या में आ रहे हैं। विधायक की पत्नी के साथ बोटेनिक्ल गार्डन में मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. राजबीर सिंह, स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डा. आशा क्वात्रा, डा. अरविंद मलिक व अन्य मौजूद रहे।

बोटेनिकल गार्डन का अवलोकन करती हुई विधायक कमल गुप्ता की धर्मपत्नी डा. प्रतिमा गुप्ता व गार्डन में फूलों की प्रदर्शनी को निहारते व खरीदारी करते लोग व बिक्री के लिए रखे फूलों के पौधे। • जागरण

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........अमर उजाला........

दिनांक 3.1.2021....पृष्ठ संख्या....1....कॉलम....2-4....

प्रदर्शनी

हकृवि में गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी में बढ़ी लोगों की दिलचस्पी

लोगों को रिझा रहे गुलदाउदी के फूल

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) के गेट नंबर-4 के नजदीक स्थित बोटेनिकल गार्डन में आमजन के लिए गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी में शहरवासी काफी रूचि ले रहे हैं। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. रेनू मुंजाल ने बताया कि कोरोना महामारी की सभी हिदायतों का पालन करते हुए इन फूलों की बिक्री की जा रही है।

उन्होंने बताया कि गुलदाउदी की लगभग 10 प्रजातियों के अलावा विभिन्न किस्म के पौधों की बिक्री लोगों के रुझान को देखते हुए 15 जनवरी तक जारी रहेगी। विधायक डॉ. कमल गुप्ता की धर्मपत्नी प्रोमिला ने भी यहां का दौरा कर प्रदर्शनी की सराहना की। डॉ. मुंजाल ने बताया कि बोटेनिक्ल गार्डन 10.5 एकड़ में फैला हुआ है, जिसमें लगभग 600 विविध प्रकार के पौधों की प्रजातियां शामिल हैं। गुलदाउदी की 10 प्रजातियों के अलावा कैक्टस व बोंसाई की विभिन्न प्रजातियां बिक्री के लिए प्रदर्शित की गई हैं। अब तक विभिन्न किस्मों की करीब 50 हजार रुपये से अधिक की बिक्री हो चुकी है। बागवानी करने वाले लोगों को ये पुष्प पसंद आ रहे हैं।

प्रदर्शनी के दौरान फूलों को देखते लोग।

गेट नंबर-4 भी खोला

डॉ. रेनू मुंजाल के अनुसार नए साल से विश्वविद्यालय के गेट नंबर-4 को सुबह साढ़े आठ बजे से सांय साढ़े पांच बजे तक खोल दिया गया है। इसके चलते अब इस फूलों की प्रदर्शनी व खरीदारी के प्रति लोग अधिक संख्या में आ रहे हैं। इस मौके पर बोटेनिक्ल गार्डन में मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह, स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा क्वात्रा, डॉ. अरविंद मलिक व अन्य मौजूद थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम......दैनिक भास्कर......

दिनांक 3.1.2022 पृष्ठ संख्या......4......कॉलम......1-3......

नहीं लगी प्रदर्शनी पर गुलदाउदी की बिक्री जोरों पर

हिसार| चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार नंबर गेट के नजदीक स्थित बोटेनिकल गार्डन में लोगों के लिए गुलदाउदी फूलों की विभिन्न किस्मों की बिक्री जारी है। हालांकि इस बार कोरोना महामारी के चलते प्रतिवर्ष की भांति गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी का आयोजन नहीं किया जा सका लेकिन बावजूद इसके लोगों का रुझान कम नहीं हुआ है। प्रतिदिन कई लोग फूलों की किस्मों और उनसे संबंधित अन्य जानकारियों व खरीदारी के लिए यहां आ रहे हैं। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. रेनु मुंजाल ने बताया कि कोरोना महामारी की सभी हिदायतों का पालन करते हुए इन फूलों की बिक्री की जा रही है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम......पाठक पक्ष......

दिनांक ..3..1..2021..पृष्ठ संख्या......—......कॉलम......—......

एचएयू में गुलदाउदी फूलों की खरीददारी के लिए बढ़ रहा शहरवासियों का रूझान

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 3 जनवरी : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार नंबर गेट के नजदीक स्थित बोटेनिकल गार्डन में आम जन के लिए गुलदाउदी फूलों की विभिन्न किस्मों की बिक्री जारी है। हालांकि इस बार कोरोना महामारी के चलते प्रतिवर्ष की भांति गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी का आयोजन नहीं किया जा सका लेकिन बावजूद इसके लोगों का रूझान कम नहीं हुआ है। प्रतिदिन कई लोग फूलों की किस्मों और उनसे संबंधित अन्य जानकारियों व खरीददारी के लिए यहां आ रहे हैं। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. रेनू मुंजाल ने बताया कि कोरोना महामारी की

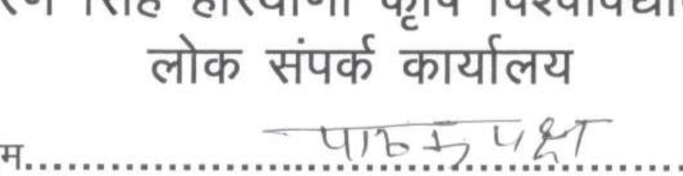

सभी हिदायतों का पालन करते हुए इन फूलों की बिक्री की जा रही है। उन्होंने बताया कि गुलदाउदी की लगभग 10 प्रजातियों के अलावा विभिन्न किस्म के पौधों की बिक्री लोगों के रूझान को देखते हुए 15 जनवरी तक जारी रहेगी। उन्होंने बताया कि गत दिनों इन फूलों की प्रदर्शनी का अवलोकन करने के लिए विधायक डॉ. कमल गुप्ता की धर्मपत्नी डॉ. प्रतिमा गुप्ता ने दौरा कर यहां के मालियों द्वारा की गई मेहनत की सराहना की। विधायक की पत्नी ने कहा कि फूल मन का आनंदित कर देते हैं और मनुष्य के मन पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। डॉ. रेनू मुंजाल ने बताया कि बोटेनिक्ल गार्डन 10.5 एकड़ में फैला हुआ है जिसमें लगभग 600 विविध प्रकार के पौधों की प्रजातियां शामिल हैं। उन्होंने बताया कि 15 जनवरी तक की जाने वाली बिक्री में गुलदाउदी की 10 प्रजातियों के अलावा कैक्टस व बोंसाई की विभिन्न प्रजातियां बिक्री के लिए प्रदर्शित की गई हैं। अब तक विभिन्न किस्मों की करीब 50 हजार रूपये से अधिक की बिक्री हो चुकी है। डॉ. रेनू मुंजाल के अनुसार नए साल से विश्वविद्यालय के गेट नंबर चार को सुबह साढ़े आठ बजे से सांय साढ़े पांच बजे तक खोल दिया गया है, जिसके चलते अब इस फूलों की प्रदर्शनी व खरीददारी के प्रति लोग अधिक संख्या में आ रहे हैं। विधायक की पत्नी के साथ बोटेनिक्ल गार्डन में मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह, स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा क्वात्रा, डॉ. अरविंद मलिक व अन्य मौजूद थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम......पांच बजे......

दिनांक 2.1.2021 पृष्ठ संख्या......— कॉलम......—

15 जनवरी तक रहेगी जारी, विश्वविद्यालय का चार नंबर गेट भी खोला गया

एचएयू में गुलदाउदी फूलों की खरीदारी के लिए बढ़ रहा शहरवासियों का रूझान

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार नंबर गेट के नजदीक स्थित बोटेनिकल गार्डन में आम जन के लिए गुलदाउदी फूलों की विभिन्न किस्मों की बिक्री जारी है। हालांकि इस बार कोरोना महामारी के चलते प्रतिवर्ष की भांति गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी का आयोजन नहीं किया जा सका लेकिन बावजूद इसके लोगों का रूझान कम नहीं हुआ है। प्रतिदिन कई लोग फूलों की किस्मों और उनसे संबंधित अन्य जानकारियों व खरीदारी के लिए यहां आ रहे हैं।

मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. रेनु मुंजाल ने बताया कि कोरोना महामारी की सभी हिदायतों का पालन करते हुए इन फूलों की बिक्री की जा रही है। लोगों को प्रतिवर्ष इस मौसम के फूलों की प्रदर्शनी का बेसब्री से इंतजार रहता है, लेकिन इस बार परिस्थितियां अनुकूल न होने के कारण यह संभव नहीं हो पाया। उन्होंने बताया कि गुलदाउदी की लगभग 10 प्रजातियों के अलावा विभिन्न किस्म के पौधों की बिक्री लोगों के रूझान को देखते हुए 15 जनवरी तक जारी रहेगी।

उन्होंने बताया कि गत दिनों इन फूलों की प्रदर्शनी का अवलोकन करने के लिए विधायक डॉ. कमल गुप्ता की धर्मपत्नी डा. प्रतिमा गुप्ता ने दौरा कर यहां के मालियों द्वारा की गई मेहनत की सराहना की। विधायक की पत्नी ने कहा कि फूल मन का आनंदित कर देते हैं और मनुष्य के मन पर सकारात्मक प्रभाव डालते है।

डॉ. रेनू मुंजाल ने बताया कि बोटेनिकल गार्डन 10.5 एकड़ में फैला हुआ है जिसमें लगभग 600 विविध प्रकार के पौधों की प्रजातियां शामिल हैं। उन्होंने बताया कि 15 जनवरी तक की जाने वाली बिक्री में गुलदाउदी की 10 प्रजातियों के अलावा कैक्टस व बोंसाई की विभिन्न प्रजातियां बिक्री के लिए प्रदर्शित की गई हैं। अब तक विभिन्न किस्मों की करीब 50 हजार रूपये से अधिक की बिक्री हो चुकी है।

एचएयू का चार नंबर गेट खुलने से बढ़ रही है संख्या

डॉ. रेनू मुंजाल के अनुसार नए साल से विश्वविद्यालय के गेट नंबर चार को सुबह साढ़े आठ बजे से सांय साढ़े पांच बजे तक खोल दिया गया है, जिसके चलते अब इस फूलों की प्रदर्शनी व खरीदारी के प्रति लोग अधिक संख्या में आ रहे हैं। विधायक की पत्नी के साथ बोटेनिकल गार्डन में मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह, स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा क्वात्रा, डॉ. अरविंद मलिक व अन्य मौजूद थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....सिटी पल्स....

दिनांक 2.1.2021...पृष्ठ संख्या....—....कॉलम....—....

एचएयू में गुलदाउदी फूलों की खरीदारी के लिए बढ़ रहा शहरवासियों का रूझान

15 जनवरी तक रहेगी जारी, विश्वविद्यालय का चार नंबर गेट भी खोला गया

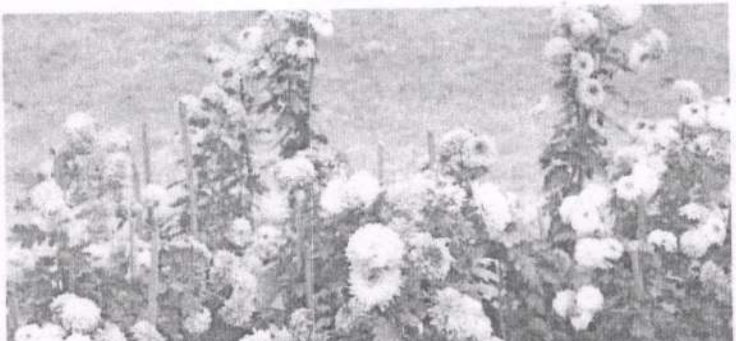

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार नंबर गेट के नजदीक स्थित बोटेनिकल गार्डन में आम जन के लिए गुलदाउदी फूलों की विभिन्न किस्मों की बिक्री जारी है। हालांकि इस बार कोरोना महामारी के चलते प्रतिवर्ष की भांति गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी का आयोजन नहीं किया जा सका लेकिन बावजूद इसके लोगों का रूझान कम नहीं हुआ है। प्रतिदिन कई लोग फूलों की किस्मों और उनसे संबंधित अन्य जानकारियों व खरीदारी के लिए यहां आ रहे हैं। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. रेनू मुंजाल ने बताया कि कोरोना महामारी की सभी हिदायतों का पालन करते हुए इन फूलों की बिक्री की जा रही है।

उन्होंने बताया कि गुलदाउदी की लगभग 10 प्रजातियों के अलावा विभिन्न किस्म के पौधों की बिक्री लोगों के रूझान को देखते हुए 15 जनवरी तक जारी रहेगी। डॉ. रेनू मुंजाल ने बताया कि बोटेनिकल गार्डन 10.5 एकड़ में फैला हुआ है जिसमें लगभग 600 विविध प्रकार के पौधों की प्रजातियां शामिल हैं। 15 जनवरी तक की जाने वाली बिक्री में गुलदाउदी की 10 प्रजातियों के अलावा कैक्टस व बोंसाई की विभिन्न प्रजातियां बिक्री के लिए प्रदर्शित की गई हैं। अब तक विभिन्न किस्मों की करीब 50 हजार रूपये से अधिक की बिक्री हो चुकी है।

एचएयू का चार नंबर गेट खुलने से बढ़ रही है संख्या

डॉ. रेनू मुंजाल के अनुसार नए साल से विश्वविद्यालय के गेट नंबर चार को सुबह साढ़े आठ बजे से सांय साढ़े पांच बजे तक खोल दिया गया है, जिसके चलते अब इस फूलों की प्रदर्शनी व खरीदारी के प्रति लोग अधिक संख्या में आ रहे हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........सिटी पल्स........

दिनांक 2.1.2021 पृष्ठ संख्या...—... कॉलम...—...

एचएयू में गुलदाउदी फूलों की खरीदारी के लिए बढ़ रहा शहरवासियों का रूझान

15 जनवरी तक रहेगी जारी, विश्वविद्यालय का चार नंबर गेट भी खोला गया

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार नंबर गेट के नजदीक स्थित बोटेनिकल गार्डन में आम जन के लिए गुलदाउदी फूलों की विभिन्न किस्मों की बिक्री जारी है। हालांकि इस बार कोरोना महामारी के चलते प्रतिवर्ष की भांति गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी का आयोजन नहीं किया जा सका लेकिन बावजूद इसके लोगों का रूझान कम नहीं हुआ है। प्रतिदिन कई लोग फूलों की किस्मों और उनसे संबंधित अन्य जानकारियों व खरीदारी के लिए यहां आ रहे हैं। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. रेनू मुंजाल ने बताया कि कोरोना महामारी की सभी हिदायतों का पालन करते हुए इन फूलों की बिक्री की जा रही है।

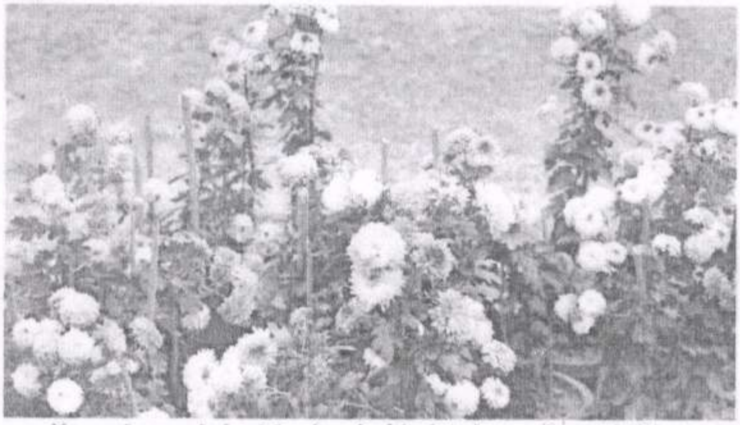

उन्होंने बताया कि गुलदाउदी की लगभग 10 प्रजातियों के अलावा विभिन्न किस्म के पौधों की बिक्री लोगों के रूझान को देखते हुए 15 जनवरी तक जारी रहेगी। डॉ. रेनू मुंजाल ने बताया कि बोटेनिकल गार्डन 10.5 एकड़ में फैला हुआ है जिसमें लगभग 600 विविध प्रकार के पौधों की प्रजातियां शामिल हैं। 15 जनवरी तक की जाने वाली बिक्री में गुलदाउदी की 10 प्रजातियों के अलावा कैक्टस व बोंसाई की विभिन्न प्रजातियां बिक्री के लिए प्रदर्शित की गई हैं। अब तक विभिन्न किस्मों की करीब 50 हजार रुपये से अधिक की बिक्री हो चुकी है।

एचएयू का चार नंबर गेट खुलने से बढ़ रही है संख्या

डॉ. रेनू मुंजाल के अनुसार नए साल से विश्वविद्यालय के गेट नंबर चार को सुबह साढ़े आठ बजे से सायं साढ़े पांच बजे तक खोल दिया गया है, जिसके चलते अब इस फूलों की प्रदर्शनी व खरीदारी के प्रति लोग अधिक संख्या में आ रहे हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ....समस्त हरियाणा........

दिनांक ..2..1..2021.. पृष्ठ संख्या ......—...... कॉलम ......—......

गुलदाउदी फूलों की खुश्बू से महका हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

15 जनवरी तक रहेगी जारी, विश्वविद्यालय का चार नंबर गेट भी खोला गया

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार नंबर गेट के नजदीक स्थित बोटेनिकल गार्डन में आम जन के लिए गुलदाउदी फूलों की विभिन्न किस्मों की बिक्री जारी है।

हालांकि इस बार कोरोना महामारी के चलते प्रतिवर्ष की भांति गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी का आयोजन नहीं किया जा सका लेकिन बावजूद इसके लोगों का रुझान कम नहीं हुआ है। प्रतिदिन कई लोग फूलों की किस्मों और उनसे संबंधित अन्य जानकारियों व खरीदारी के लिए यहां आ रहे हैं। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. रेनू मुंजाल ने बताया कि कोरोना महामारी की सभी हिदायतों का पालन करते हुए इन फूलों की बिक्री की जा रही है।

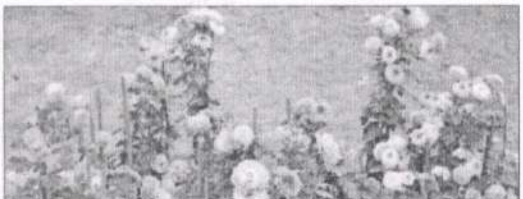

लोगों को प्रतिवर्ष इस मौसम के फूलों की प्रदर्शनी का बेसब्री से इंतजार रहता है, लेकिन इस बार परिस्थितियां अनुकूल न होने के कारण यह संभव नहीं हो पाया। उन्होंने बताया कि गुलदाउदी की लगभग 10 प्रजातियों के अलावा विभिन्न किस्म के पौधों की बिक्री लोगों के रूझान को देखते हुए 15 जनवरी तक जारी रहेगी।

उन्होंने बताया कि गत दिनों इन फूलों की डॉ. रेनू मुंजाल ने बताया कि बोटेनिक्ल गार्डन 10.5 एकड़ में फैला हुआ है जिसमें लगभग 600 विविध प्रकार के पौधों की प्रजातियां शामिल हैं। उन्होंने बताया कि 15 जनवरी तक की जाने वाली बिक्री में गुलदाउदी की 10 प्रजातियों के अलावा कैक्टस व बोंसाई की विभिन्न प्रजातियां बिक्री के लिए प्रदर्शित की गई हैं। अब तक विभिन्न किस्मों की करीब 50 हजार रूपये से अधिक की बिक्री हो चुकी है।

एचएयू का चार नंबर गेट खुलने से बढ़ रही है संख्या

डॉ. रेनू मुंजाल के अनुसार नए साल से विश्वविद्यालय के गेट नंबर चार को सुबह साढ़े आठ बजे से सांय साढ़े पांच बजे तक खोल दिया गया है, जिसके चलते अब इस फूलों की प्रदर्शनी व खरीदारी के प्रति लोग अधिक संख्या में आ रहे हैं। विधायक की पत्नी के साथ बोटेनिक्ल गार्डन में मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजवीर सिंह, स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा क्वात्रा, डॉ. अरविंद मलिक व अन्य मौजूद थे।

प्रदर्शन का डॉ. प्रतिमा गुप्ता ने किया अवलोकन

प्रदर्शनी का अवलोकन करने के लिए विधायक डॉ. कमल गुप्ता की धर्मपत्नी डॉ. प्रतिमा गुप्ता ने दौरा कर यहां के मालियों द्वारा की गई मेहनत की सराहना की। विधायक की पत्नी ने कहा कि फूल मन को आनंदित कर देते हैं और मनुष्य के मन पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........नभ छोर........

दिनांक ..2..1..2021....पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

हकृवि में गुलदाउदी की बिक्री 15 तक

हिसार/02 जनवरी/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार नंबर गेट के नजदीक स्थित बॉटैनिकल गार्डन में आम जन के लिए गुलदाउदी फूलों की विभिन्न किस्मों की बिक्री जारी है। हालांकि इस बार कोरोना महामारी के चलते प्रतिवर्ष की भांति गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी का आयोजन नहीं किया जा सका लेकिन बावजूद इसके लोगों का रूझान कम नहीं हुआ है। प्रतिदिन कई लोग फूलों की किस्मों और उनसे संबंधित अन्य जानकारियों व खरीदारी के लिए यहां आ रहे हैं। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. रेनू मुंजाल ने बताया कि गुलदाउदी की लगभग 10 प्रजातियों के अलावा विभिन्न किस्म के पौधों की बिक्री लोगों के रूझान को देखते हुए 15 जनवरी तक जारी रहेगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........दैनिक जागरण........

दिनांक ...3.1.2021...पृष्ठ संख्या.......4.......कॉलम.....1-5.....

जागरूकता विज्ञानियों ने सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों के प्रयोग की सलाह दी, सरसों के खेत का दौरा कर दी जानकारी

सरसों की बीमारियों की रोकथाम कर अधिक पैदावार लें किसान

जागरण संवाददाता, हिसार: सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं।

किसान सरसों की बीमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में तिलहन विभाग के विज्ञानी डा. राम अवतार बताते हैं कि यह समय बीमारियों वाला है। सरसों में खासकर बीमारियों की संभावना है।

दोपहर तीन बजे के बाद करें छिड़कावः विज्ञानियों के अनुसार अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले स्प्रे के छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं।

सरसों के खेत का मुआयना करते वैज्ञानिक। • विज्ञप्ति

ऐसे करें बीमारियों की रोकथाम

सहायक विज्ञानियों डा. राकेश पूनियां के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रतुआ बीमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैंकोजेब को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 3 से 4 बार छिड़काव करें। इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार करें।

ये हैं सरसों की मुख्य बीमारी और उनके लक्षण

अल्टरनेरिया ब्लाइट

सरसों की फसल की यह मुख्य बीमारी है। इस बीमारी में पौधे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और पत्ते पर गोल छल्ले दिखाए देने लगते हैं।

फुलिया या डाउनी मिल्डू

इस बीमारी में पत्तियों की निचली स्तह पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चूर्ण सा बन जाता है।

सफेद रतुआ

सरसों की इस बीमारी में पत्तियों पर सफेद और क्रीम रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इससे तने व फूल बेढंग आकार के हो जाते हैं जिसे स्टैग हैड कहते हैं। यह बीमारी ज्यादा पछेती फसल में अधिक होती है।

तनागलन

तनागलन रोग में तनों पर लम्बे आकार के भूरे जल शक्ति धब्बे बनते हैं जिन पर बाद में सफेद फफूंद की तरह बन जाती है। ये लक्षण पत्तियों व टहनियों पर भी नजर आ सकते हैं तथा फूल आने या फलियां बनने पर इस रोग का अधिक आक्रमण दिखाई देता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.......पंजाब केसरी.......

दिनांक 3.1.2021....पृष्ठ संख्या....4....कॉलम....1-5....

'कृषि वैज्ञानिकों ने खेतों में किया फसल का निरीक्षण'

हिसार, 2 जनवरी (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में तिलहन विभाग के वैज्ञानिक डा. राम अवतार व उनकी टीम ने सरसों फसल पर आने वाली बीमारियों को ध्यान में रखते हुए खेतों का दौरा किया। वैज्ञानिकों के अनुसार अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं।

सरसों के खेत का मुआयना करते वैज्ञानिक।

उन्होंने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें, ताकि मधुमक्खियों को कोई नुक्सान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं। तिलहन विभाग के सहायक वैज्ञानिक डा. राकेश पूनिया (पादप रोग विशेषज्ञ) के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बीमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है। सरसों की फसल की मुख्य बीमारियों की पहचान कर उनकी रोकथाम के लिए किसान विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों ही प्रयोग करें ताकि बीमारी का सही समय पर उचित प्रबंध हो सके।

ये हैं सरसों की मुख्य बीमारियां व उनके लक्षण

अल्टरनेरिया ब्लाइट : सरसों की फसल की मुख्य बीमारी है। इसमें पौधे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इनका रंग काला हो जाता है और पत्ते पर गोल छल्ले दिखाई देने लगते हैं।

फुलिया या डाऊनी मिल्डू : इस बीमारी में पत्तियों की निचली सतह पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चूर्ण-सा बन जाता हैं।

सफेद रतुआ : सरसों की इस बीमारी में पत्तियों पर सफेद और क्रीम रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इससे तने व फूल बेढंग आकार के हो जाते हैं जिसे स्टैग हैड कहते हैं। यह बीमारी ज्यादा पछेती फसल में अधिक होती है।

तना गलन : यह रोग में तनों पर लम्बे आकार के भूरे जल शक्ति धब्बे बनते हैं, जिन पर बाद में सफेद फफूंद की तरह बन जाती है। ये लक्षण पत्तियों व टहनियों पर भी नजर आ सकते हैं तथा फूल आने या फलियां बनने पर इस रोग का अधिक आक्रमण दिखाई देता है, जिससे तने टूट जाते हैं और तनों के भीतर काले रंग के पिण्ड बनते हैं।

ऐसे करें रोकथाम

सहायक वैज्ञानिक डा. राकेश पूनिया (पादप रोग विशेषज्ञ) के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रतुआ बीमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैंकोजेब (डाइथेन या इंडोफिल एम. 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 3 से 4 बार छिड़काव करें।

इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम (बाविस्टिन) प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। जिन क्षेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है, वहां बिजाई के 45 से 50 दिन तथा 65 से 70 दिन के बाद कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार छिड़काव करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........हरि भूमि, दैनिक भास्कर

दिनांक 3.1.2021....पृष्ठ संख्या......9, 2......कॉलम....4-8, 8......

सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों के प्रयोग की सलाह दी

सरसों में बीमारियों की समय से पहचान करें

- तिलहन विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार व उनकी टीम ने किसानों को दी सलाह

हरिभूमि न्यूज ▶▶हिसार

सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं।

किसान सरसों की बीमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं। यह सलाह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में तिलहन विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार व उनकी टीम ने दी है। उन्होंने यह सलाह इस समय फसल पर आने वाली बीमारियों को ध्यान में रखते हुए दी है। वैज्ञानिकों ने विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र का दौरा करने के उपरांत यह सलाह जारी की है।

हिसार। सरसों के खेत का मुआयना करते वैज्ञानिक। फोटो: हरिभूमि

वैज्ञानिकों के अनुसार अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बिमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं।

तिलहन विभाग के सहायक वैज्ञानिक डॉ. राकेश पूनियां (पादप रोग विशेषज्ञ)के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बिमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है। सरसों की फसल की मुख्य बिमारियों की पहचान कर उनकी रोकथाम के लिए किसान विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों ही प्रयोग करें ताकि बीमारी का सही समय पर उचित प्रबंध हो सके। सरसों में मुख्य रूप से अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया या डाउनी मिल्ड्यु, सफेद रतुआ, तनागलन बीमारी का प्रकोप हो सकता है।

एचएयू के वैज्ञानिकों ने किया सरसों के खेतों का दौरा

हिसार। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बिमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं। यह सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में तिलहन विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार व उनकी टीम ने दी है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........नभ छोर........

दिनांक 2.1.2021...पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

सरसों वर्गीय फसलों को समय पर पहचान कर रोगों से बचाया जा सकता है: हकृवि

हिसार/02 जनवरी/रिपोर्टर

सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बिमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उसकी आसानी से रोकथाम कर सकते हैं। यह सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में तिलहन विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार व उनकी टीम ने दी है। उन्होंने यह सलाह इस समय फसल पर आने वाली बिमारियों को ध्यान में रखते हुए दी है। वैज्ञानिकों ने विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र का दौरा करने के उपरांत यह सलाह जारी की है। वैज्ञानिकों के अनुसार अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बिमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बिमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं। तिलहन विभाग के सहायक वैज्ञानिक डॉ. राकेश पूनिया (पादप रोग विशेषज्ञ)के अनुसार सरसों की फसल में कई बिमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बिमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.......... समस्त हरियाणा ....

दिनांक ..2...1...2021.. पृष्ठ संख्या..........—.......... कॉलम..........—..........

कृषि वैज्ञानिक ने दी सरसों में बीमारियों की समय से पहचान व रोकथाम करने की सलाह

वैज्ञानिकों ने सरसों के खेत का दौरा कर दी जानकारी

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बिमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं। यह सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालिय में तिलहन विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार व उनकी टीम ने दी है। उन्होंने यह सलाह इस समय फसल पर आने वाली बिमारियों को ध्यान में रखते हुए दी है। वैज्ञानिकों ने विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र का दौरा करने के उपरांत यह सलाह जारी की है। वैज्ञानिकों के अनुसार अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बिमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। किसान फसल की बिमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें। तिलहन विभाग के सहायक वैज्ञानिक डॉ. राकेश पूनियां (पादप रोग विशेषज्ञ) के अनुसार सरसों की फसल में कई बिमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है।

ये हैं सरसों की मुख्य बीमारी और उनके लक्षण

अल्टरनेरिया ब्लाइट : सरसों की फसल की यह मुख्य बिमारी है। इस बिमारी में पौधे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और पत्ते पर गोल छल्ले दिखाए देने लगते हैं।

फुलिया या डाउनी मिल्डू : इस बिमारी में पत्तियों की निचली सतह पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चूर्ण सा बन जाता हैं।

सफेद रतुआ : सरसों की इस बिमारी में पत्तियों पर सफेद और क्रीम रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इससे तने व फूल बेढंग आकार के हो जाते हैं जिसे स्टैग हैड कहते हैं। यह बिमारी ज्यादा पछेती फसल में अधिक होती है।

तनागलन : तनागलन रोग में तनों पर लम्बे आकार के भूरे जल शक्ति धब्बे बनते हैं जिन पर बाद में सफेद फफूंद की तरह बन जाती है। ये लक्षण पत्तियों व टहनियों पर भी नजर आ सकते हैं तथा फूल आने या फलियां बनने पर इस रोग का अधिक आक्रमण दिखाई देता है जिससे तने टूट जाते हैं और तनों के भीतर काले रंग के पिण्ड बनते हैं।

ऐसे करें बिमारियों की रोकथाम

सहायक वैज्ञानिक डॉ. राकेश पूनियां (पादप रोग विशेषज्ञ) के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रतुआ बिमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैंकोजेब (डाइथेन या इंडोफिल एम 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 3 से 4 बार छिड ?ाव करें। इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम (बाविस्टिन) प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। जिन क्षेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है वहां बिजाई के 45 से 50 दिन तथा 65 से 70 दिन के बाद कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार छिड़काव करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पाँच बजे, सिटी पल्स.....

दिनांक 2.1.2021....पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

वैज्ञानिकों ने सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों के प्रयोग की सलाह दी, सरसों के खेत का दौरा कर दी जानकारी

सरसों की बीमारियों की समय से पहचान व रोकथाम से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं किसान : कृषि वैज्ञानिक

पांच बजे न्यूज

हिसार। सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती है। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बिमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते है। यह सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में तिलहन विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार व उनकी टीम ने दी है। उन्होंने यह सलाह इस समय फसल पर आने वाली बिमारियों को ध्यान में रखते हुए दी है। वैज्ञानिकों ने विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र का दौरा करने के उपरांत यह सलाह जारी की है। वैज्ञानिकों के अनुसार अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बिमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बिमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं। तिलहन विभाग के सहायक वैज्ञानिक डॉ. राकेश पूनियां (पादप रोग विशेषज्ञ)के अनुसार सरसों की फसल में कई बिमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बिमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है। सरसों की फसल की मुख्य बिमारियों की पहचान कर उनकी रोकथाम के लिए किसान विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों हो प्रयोग करें ताकि बिमारी का सही समय पर उचित प्रबंध हो सके।

ये है सरसों की मुख्य बिमारी और उनके लक्षण

अल्टरनेरिया ब्लाइट

सरसों की फसल को यह मुख्य बिमारी है। इस बिमारी में पौधे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और पत्ते पर गोल छल्ले दिखाए देने लगते हैं।

फुलिया या डाउनी मिल्डू

इस बिमारी में पत्तियों की निचली सतह पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चूर्ण सा बन जाता है।

सफेद रतुआ

सरसों की इस बीमारी में पत्तियों पर सफेद और क्रीम रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते है। इससे तने व फूल बेढंग आकार के हो जाते हैं जिसे स्टैग हैड कहते हैं। यह बिमारी ज्यादा पछेती फसल में अधिक होती है।

तनागलन

तनागलन रोग में तनों पर लम्बे आकार के भूरे जल शक्ति धब्बे बनते हैं जिन पर बाद में सफेद फफूंद की तरह बन जाती है। ये लक्षण पत्तियों व टहनियों पर भी नजर आ सकते हैं तथा फूल आने या फलियां बनने पर इस रोग का अधिक आक्रमण दिखाई देता है जिससे तने टूट जाते है और तनों के भीतर काले रंग के पिण्ड बनते है।

ऐसे करें बीमारियों की रोकथाम

सहायक वैज्ञानिक डॉ. राकेश पूनियां (पादप रोग विशेषज्ञ)के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रतुआ बिमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैंकोजेब (डाइथेन या इंडोफिल एम 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 3 से 4 बार छिड़काव करें।

इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम(बाविस्टिन) प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। जिन क्षेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है वहां बिजाई के 45 से 50 दिन तथा 65 से 70 दिन के बाद कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार छिड़काव करें।

सरसों की बीमारियों की समय से पहचान व रोकथाम से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं किसान : कृषि वैज्ञानिक

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बिमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं। यह सलाह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में तिलहन विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार व उनकी टीम ने दी है।

वैज्ञानिकों के अनुसार अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बिमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं। तिलहन विभाग के सहायक वैज्ञानिक डॉ. राकेश पूनियां (पादप रोग विशेषज्ञ)के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बीमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम......आज समाज......

दिनांक 3.1.2021....पृष्ठ संख्या......—......कॉलम......—......

'रोकथाम से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं किसान'

सरसों के खेत का मुआयना करते वैज्ञानिक।

आज समाज नेटवर्क

हिसार। सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है।

किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बीमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं। यह सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में तिलहन विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार व उनकी टीम ने दी है। उन्होंने यह सलाह इस समय फसल पर आने वाली बीमारियों को ध्यान में रखते हुए दी है। वैज्ञानिकों ने विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र का दौरा करने के उपरांत यह सलाह जारी की है। वैज्ञानिकों के अनुसार अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बिमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिडकाव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....नभ. छोर....

दिनांक .2..1..2021..पृष्ठ संख्या....—....कॉलम....—....

सरसों वर्गीय फसलों को समय पर पहचान कर रोगों से बचाया जा सकता है: हकृवि

हिसार/02 जनवरी/रिपोर्टर

सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बिमारी को समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उसकी आसानी से रोकथाम कर सकते हैं। यह सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में तिलहन विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार व उनकी टीम ने दी है। उन्होंने यह सलाह इस समय फसल पर आने वाली बिमारियों को ध्यान में रखते हुए दी है। वैज्ञानिकों ने विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र का दौरा करने के उपरांत यह सलाह जारी की है। वैज्ञानिकों के अनुसार अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बिमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनको किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बिमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं। तिलहन विभाग के सहायक वैज्ञानिक डॉ. राकेश पूनिया (पादप रोग विशेषज्ञ)के अनुसार सरसों की फसल में कई बिमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बिमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........दैनिक जागरण........

दिनांक 3.1.2021 पृष्ठ संख्या....3....कॉलम....5....

एचएयू के दो विज्ञानी डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित

डॉ. जतेश। ● स्वयं

डा. रश्मि। ● स्वयं

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के दो वैज्ञानिकों को डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित किया गया है। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह ने बताया कि नई दिल्ली में आयोजित 11वीं इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन एग्रीकल्चर, हार्टिकल्चर एंड प्लांट साइंसिज में यह सम्मान दिया गया।

उन्होंने बताया कि समाज शास्त्र विभाग की सह-प्राध्यापक डॉ. रश्मि त्यागी व डॉ. जतेश काठपालिया को यह सम्मान दी सोसायटी ऑफ ट्रापिकल एग्रीकल्चर की ओर से इनके द्वारा कांफ्रेंस में अपने शोध-पत्र प्रस्तुत करने पर दिया गया है। इसके लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर, कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज, अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह व समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्षा डॉ. विनोद कुमारी ने दोनों वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........पंजाब केसरी, अमर उजाला........

दिनांक 3.1.2021...पृष्ठ संख्या.......2.........कॉलम.......3-4.........

'एच.ए.यू. के 2 वैज्ञानिक डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित'

डा. रश्मि त्यागी व डा. जतेश काठपालिया।

हिसार, 2 जनवरी (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के 2 वैज्ञानिकों को डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित किया गया है। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. राजबीर सिंह ने बताया कि नई दिल्ली में आयोजित 11वीं इंटरनैशनल कांफ्रैंस ऑन एग्रीकल्चर, हार्टिकल्चर एंड प्लांट साइंसिज में यह सम्मान दिया गया। उन्होंने बताया कि समाज शास्त्र विभाग की सह-प्राध्यापक डा. रश्मि त्यागी व डा. जतेश काठपालिया को यह सम्मान दि सोसायटी ऑफ ट्रापिकल एग्रीकल्चर की ओर से इनके द्वारा कांफ्रैंस में अपने शोध-पत्र प्रस्तुत करने पर दिया गया है।

एचएयू के दो वैज्ञानिक डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम अवॉर्ड से सम्मानित

डॉ. रश्मि त्यागी, डॉ. जतेश काठपालिया

हिसार (ब्यूरो)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) की दो वैज्ञानिकों को डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम अवॉर्ड-2020 से सम्मानित किया गया है। यह जानकारी देते हुए मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह ने बताया कि नई दिल्ली में आयोजित 11वीं इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन एग्रीकल्चर, हार्टिकल्चर एंड प्लांट साइंसेज में यह सम्मान दिया गया। उन्होंने बताया कि समाज शास्त्र विभाग की सह-प्राध्यापक डॉ. रश्मि त्यागी व डॉ. जतेश काठपालिया को यह सम्मान दी सोसायटी ऑफ ट्रापिकल एग्रीकल्चर की ओर से उनके द्वारा कांफ्रेंस में अपने शोधपत्र प्रस्तुत करने पर दिया गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........दैनिक सवेरा, दैनिक भास्कर

दिनांक 3.1.2-21...पृष्ठ संख्या.......7..........कॉलम.......7-8........

हकृवि के दो वैज्ञानिक डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अवार्ड से सम्मानित

हिसार, (सुरेंद्र सोढी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के दो वैज्ञानिकों को डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अवार्ड- 2020 से सम्मानित किया गया है। यह जानकारी देते हुए मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह ने बताया कि नई दिल्ली में आयोजित 11वीं इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन एग्रीकल्चर, हार्टिकल्चर एंड प्लांट साइंसिज में यह सम्मान दिया गया। उन्होंने बताया कि समाज शास्त्र विभाग की सह-प्राध्यापक डॉ. रश्मि त्यागी व डॉ. जतेश काठपालिया को यह सम्मान दी सोसायटी ऑफ ट्रापिकल एग्रीकल्चर की ओर से इनके द्वारा कांफ्रेंस में अपने शोध-पत्र प्रस्तुत करने पर दिया गया है। इसके लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह, कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज, अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह व समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्षा डॉ. विनोद कुमारी ने दोनो वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

डा. जतेश काठपालिया एवं सह प्राध्यापक डॉ. रश्मि त्यागी का फाइल फोटो।

एचएयू के दो वैज्ञानिक डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम अवॉर्ड से सम्मानित

भास्कर न्यूज, हिसार।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के दो वैज्ञानिकों को डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित किया गया है। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह ने बताया कि नई दिल्ली में आयोजित 11वीं इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन एग्रीकल्चर, हार्टिकल्चर एंड प्लांट साइंसिज में यह सम्मान दिया गया। उन्होंने बताया कि समाज शास्त्र विभाग की सह-प्राध्यापक डॉ. रश्मि त्यागी व डॉ. जतेश काठपालिया को यह सम्मान दी सोसायटी ऑफ ट्रापिकल एग्रीकल्चर की ओर से इनके द्वारा कॉन्फ्रेंस में अपने शोध-पत्र प्रस्तुत करने पर दिया गया है। इसके लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह, कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज, अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह व समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्षा डॉ. विनोद कुमारी ने दोनो वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम......सिटी पल्स......

दिनांक .2...1...2021.पृष्ठ संख्या......—......कॉलम......—......

एचएयू के दो वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के दो वैज्ञानिकों को डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित किया गया है। यह जानकारी देते हुए मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह ने बताया कि नई दिल्ली में आयोजित 11वीं इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन एग्रीकल्चर, हार्टिकल्चर एंड प्लांट साइंसिज में यह सम्मान दिया गया। उन्होंने बताया कि समाज शास्त्र विभाग की सह-प्राध्यापक डॉ. रश्मि त्यागी व डॉ. जतेश काठपालिया को यह सम्मान दी सोसायटी ऑफ ट्रापिकल एग्रीकल्चर की ओर से इनके द्वारा कांफ्रेंस में अपने शोध-पत्र प्रस्तुत करने पर दिया गया है। इसके लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह, कुलसचिव डॉ. बी. आर. कंबोज, अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह व समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्षा डॉ. विनोद कुमारी ने दोनों वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

डॉ. रश्मि त्यागी

डॉ. जतेश काठपालिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम......पाठक पक्ष......

दिनांक ..3...1....2020..पृष्ठ संख्या......—......कॉलम......—......

एचएयू के दो वैज्ञानिक डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 3 जनवरी : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के दो वैज्ञानिकों को डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित किया गया है। यह जानकारी देते हुए मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह ने बताया कि नई दिल्ली में आयोजित 11वीं इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन एग्रीकल्चर, हार्टिकल्चर एंड प्लांट साइंसिज में यह सम्मान दिया गया। उन्होंने बताया कि समाज शास्त्र विभाग की सह-प्राध्यापक डॉ. रश्मि त्यागी व डॉ. जतेश काठपालिया को यह सम्मान दी सोसायटी ऑफ ट्रापिकल एग्रीकल्चर की ओर से इनके द्वारा कांफ्रेंस में अपने शोध-पत्र प्रस्तुत करने पर दिया गया है। इसके लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह, कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज, अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह व समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्षा डॉ. विनोद कुमारी ने दोनो वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........पांच बजे........

दिनांक ..2..1..2021..पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

एचएयू के दो वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के दो वैज्ञानिकों को डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित किया गया है। यह जानकारी देते हुए मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह ने बताया कि नई दिल्ली में आयोजित 11वीं इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन एग्रीकल्चर, हार्टिकल्चर एंड प्लांट साइंसिज में यह सम्मान दिया गया।

उन्होंने बताया कि समाज शास्त्र विभाग की सह-प्राध्यापक डॉ. रश्मि त्यागी व डॉ. जतेश काठपालिया को यह सम्मान दी सोसायटी ऑफ ट्रापिकल एग्रीकल्चर की ओर से इनके द्वारा कांफ्रेंस में अपने शोध-पत्र प्रस्तुत करने पर दिया गया है। इसके लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह, कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज, अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह व समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्षा डॉ. विनोद कुमारी ने दोनो वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........समस्त हरियाणा........

दिनांक 2.1.2021 पृष्ठ संख्या........—........कॉलम........—........

एचएयू के दो वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित

डॉ. रश्मि त्यागी

डॉ. जतेश काठपालिया

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के दो वैज्ञानिकों को डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित किया गया है। यह जानकारी देते हुए मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह ने बताया कि नई दिल्ली में आयोजित 11वीं इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन एग्रीकल्चर, हार्टिकल्चर एंड प्लांट साइंसिज में यह सम्मान दिया गया। उन्होंने बताया कि समाज शास्त्र विभाग की सह-प्राध्यापक डॉ. रश्मि त्यागी व डॉ. जतेश काठपालिया को यह सम्मान दी सोसायटी ऑफ ट्रापिकल एग्रीकल्चर की ओर से इनके द्वारा कांफ्रेंस में अपने शोध-पत्र प्रस्तुत करने पर दिया गया है। इसके लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह, कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज, अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह व समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्षा डॉ. विनोद कुमारी ने दोनो वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

एचएयू के दो वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित

हिसार।चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के दो वैज्ञानिकों को डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित किया गया है। यह जानकारी देते हुए मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह ने बताया कि नई दिल्ली में आयोजित 11वीं इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन एग्रीकल्चर, हार्टिकल्चर एंड प्लांट साइंसिज में यह सम्मान दिया गया।

उन्होंने बताया कि समाज शास्त्र विभाग की सह-प्राध्यापक डॉ. रश्मि त्यागी व डॉ. जतेश काठपालिया को यह सम्मान दी सोसायटी ऑफ ट्रापिकल एग्रीकल्चर की ओर से इनके द्वारा कांफ्रेंस में अपने शोध-पत्र प्रस्तुत करने पर दिया गया है। इसके लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह, कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज, अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह व समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्षा डॉ. विनोद कुमारी ने दोनो वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.......नभ छोर.......

दिनांक ..2.1.2021....पृष्ठ संख्या.......—.......कॉलम.......—.......

डॉ. रश्मि व डॉ. जतेश को डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम अवार्ड

हिसार/02 जनवरी/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के दो वैज्ञानिकों को डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित किया गया है। यह जानकारी देते हुए मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह ने बताया कि उन्हें नई दिल्ली में आयोजित 11वीं इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन एग्रीकल्चर, हार्टिकल्चर एंड प्लांट साइंसिज में यह सम्मान दिया गया।

उन्होंने बताया कि समाज शास्त्र विभाग की सह प्राध्यापक डॉ. रश्मि त्यागी व डॉ. जतेश काठपालिया को यह सम्मान दी सोसायटी ऑफ ट्रॉपिकल एग्रीकल्चर की ओर से इनके द्वारा कॉन्फ्रेंस में अपने शोध पत्र प्रस्तुत करने पर दिया गया है। इसके लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह, कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज, अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह व समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्षा डॉ. विनोद कुमारी ने दोनों वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।